इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ।।

इका बाणी इकु गरु इको सबदु वीचारि ।। (पृ. 646)

इका बाणी—

इस शब्द को समझने के लिए गहन आत्मिक विचार की आवश्यकता है।

यदि किसी ठोस पदार्थ (material) की वास्तविकता को जानने के लिए चीर-फाड़ (dissect) की जाये, तो वह पदार्थ कई रूपों, तत्वों में परिवर्तित होता प्रतीत होता है। उदाहरणस्वरूप—

हाइड्रोजन (nitrogen) तथा आक्सीजन (oxygen) के सुमेल से पानी बनता है ।

नाइट्रोजन (hydrogen) तथा आक्सीजन के मेल से हवा बनती है।

कार्बन (carbon) तथा आक्सीजन के मेल से आग का प्रकटाव होता है।

मनुष्य की देह पाँच तत्वों की बनी हुई है । जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, तब यह पाँच तत्व अपने-अपने मूल तत्वों में विलीन हो जाते हैं ।

इससे भी गहरी खोज की जाये, तब प्रत्येक वस्तु इलैक्ट्रान्स (electrons) आदि में बदलती हुई अपने वास्तविक परम तत् (primal element) की अवस्था में प्रकट होती है तथा जब यह हरकत (vibrate) करती है, तब इस में से आश्चर्यजनक आत्मिक कला के प्रकटाव होते हैं—

1. अनहद धुन (Divine Music)
2. आत्मिक प्रकाश (Divine Light)
3. आत्मिक शक्ति (Divine Power)

यह 'अनहद नाद' 'अनहद धुन', 'शबद' अथवा 'बाणी' हमारे अन्दर आत्मिक गहराईयों में एक-रस निरन्तर बजती रहती है ।

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि **घटि घटि वाजहि नाद ।।** (पृ. 6)

घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ।। (पृ. 62)

सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबरि लहै ।। (पृ. 945)

जब हमारी 'सुरति' अन्तरमुख होकर सिमरन द्वारा —

अनहद धुन को सुन कर

विस्माद में अचम्भित हो कर

वाह-वाह के आत्मिक हिंडोले पर चढ़ती है,

तब गुरसबदी गोबिंद की गर्जन अनुभव होती है तथा इस का किसी 'बोली' द्वारा प्रकटाव होता है, तब उसे **'बाणी'** कहा जाता है ।

जब इसी 'अनहद धुन' अथवा **'दिव्य बाणी'** का प्रकटाव गुरू, भक्तों या सन्तों के हृदय की गहराईयों में से होता है, तब उसे —

'गुरबाणी'
'भक्त बाणी'
'सच बाणी'
'अंमृत बाणी'
'अनहद बाणी'
'निर्मल बाणी'
'धुर की बाणी'
'रवसम की बाणी'
'प्रभ बाणी'
'रूढ़ी बाणी'
'पूरी बाणी'
'अचरज बाणी'

आदि कहा जाता है ।

यह 'अनहद धुन', 'अनहद नाद' अथवा 'बाणी' — **अकाल पुरुष का प्रकाश रूप है**, जिस प्रकार 'धूप' — सूर्य का प्रकाश रूप है ।

क्योकि अकाल पुरुष सदा 'एक' है, इसलिए उस में से प्रकाश-मयी 'अनहद

धुन', 'अनहद नाद', **'अनहद बाणी' भी एक ही हो सकती है ।**

जैसे सूर्य में से सदा ही अटूट, अपार, अनहद, निरंतर किरणों के प्रकाश से संसार को जीवन प्रदान होता है। इसी प्रकार इस अनहद धुन से 'बाणी' द्वारा संसार को सदा के लिए ईश्वरीय प्रकाश तथा **'आत्मिक जीवन'** मिलता है ।

जब यह प्रकाश रूप 'बाणी', 'शबद' अथवा 'अनहद नाद'—

एक है
अकाल है
अ – देश है ।
अंतहीन
आदि-जुगादि है
सम्पूर्ण है,

तब यह अनहद बाणी—

शब्दों में
बोली में
देश में
काल में
धर्म या मजहब में

सीमित नही हो सकती।

इस बाणी के सर्वज्ञ तथा अनन्त होने का यह प्रमाण है कि **'गुरू ग्रन्थ साहिब जी'** में सिख गुरू साहिबान के अतिरिक्त, अनेक समकालीन तथा कई मत तथा देशों के अलग-अलग समय पर हुए संतों-भक्तों-महापुरुषों की बाणी भी सम्मिलित है, **जो एक ही 'अनहद धुन' की प्रतीक है** तथा इसके प्रकाश में से उन संतों-भक्तों के हृदय तल से भिन्न-भिन्न बोलियों, देशों में समय-समय पर प्रकट होती रही है ।

जिस प्रकार **एक ही 'नानक ज्योति'** गुरू साहिब के दस स्वरूपों में से प्रकाशमान होती रही, उसी प्रकार 'अनहद बाणी' अथवा **'इका बाणी'** भी सीमित

बोली तथा सीमित शब्दों में प्रकाशमान हुई है जिसे हम गुरबाणी अथवा 'गुरू ग्रन्थ साहिब जी' के स्वरूप में मानते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि किन्हीं विशेष शब्दों या बोली का रूप धारण करने पर भी, यह 'अनहद बाणी'— शब्दों या बोली में सीमित नहीं हो सकती।

अखर सासत्र सिंमिति पुराना ।।
अखर नाद कथन वखयाना ।। .....
द्रिसटिमान अखर है जेता ।।
नानक पारब्रहम निरलेपा ।। (पृ. 261)

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ।।
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ।।
जहा बोल तह अछर आवा ।। जह अबोल तह मनु न रहावा ।।
बोल अबोल मधि है सोई ।।
जस ओहु है तस लखै न कोई ।। (पृ. 340)

इसलिए यह कहना गलत है कि यह बाणी जो हम गुरसिक्खों को विरासत में मिली है, **केवल हम सिक्खों की ही 'सम्पत्ति' है**। अपितु यह बाणी देश-काल से रहित है तथा 'अनहद धुन' द्वारा समस्त खण्डों-ब्रह्मण्डों में फैलियो अनुराग (अनुराग के रूप में प्रसारित) है, तभी यह बाणी समस्त विश्व का साँझा युगो-युग प्रकाश सतम्भ अथवा **'जग चानण'** है —

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ।। (पृ. 67)
परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ।। (पृ. 647)
खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ।। (पृ. 747&48)

इसलिए यह गुरबाणी हम गुरसिक्खों की विरासत ही नहीं, अपितु अमानत भी है, जिस के **'अनुभवी' तत् ज्ञान'** के प्रकाश को संसार के कोने-कोने तक फैलाना हमारा प्रथम तथा मुख्य कर्त्तव्य बनता है।

परन्तु अत्यन्त दुख की बात है कि सतिगुरू जी के इस अमूल्य आत्मिक खजाने की विरासत से हम स्वयं भी पुरा-पुरा लाभ नहीं ले सके। संसार में इस बाणी के सार्थक 'तत् ज्ञान' को फैलाना तो क्या था, अपितु गुरबाणी को केवल —

पाठ-पूजा

कर्म-काण्ड

सामाजिक व्यवहार

स्वार्थ पूर्ति

राग के प्रकटाव

वाद-विवाद

करने के लिए प्रयोग किया है। इस लापरवाही के लिए समूह सिक्ख-संगत जिम्मेवार है।

'इक गुरू' —

गुरू शब्द के अर्थ हैं, जो अज्ञान को नाश करता है तथा सिक्ख को 'तत् ज्ञान' समझाता है, वह 'गुरू' है।

दूसरे शब्दों में अज्ञानता या भ्रम के अंधकार को दूर करने वाले 'प्रकाश' को गुरू कहा जाता है, इसलिए 'गुरू' दिव्य रोशनी या प्रकाश रूप 'ज्योति' है।

जिस प्रकार दृश्यमान दुनिया में सूर्य एक है तथा उसकी एक मात्र प्रकाशमयी 'धूप' समस्त दुनिया का अंधकार दूर करती है। इसी प्रकार दिव्य धूप अथवा 'शबद'— हमारे माया के भ्रम रूपी अंधकार को दूर करता है। **यह दिव्य प्रकाश रूप शबद ही सारे विश्व का सच्चा पवित्र एक मात्र 'गुरू' है**। यह अति सूक्ष्म प्रकाश मयी 'जीवन-रौ' है, जिसे गुरबाणी में —

नाम

शबद

अंमृत

हुक्म

बाणी

आदि, अनेक नामों से सम्मानित किया गया है।

गुरू साहिब स्वयं **'ज्योति-स्वरूप'** थे, **'शबद-स्वरूप'** थे, परन्तु हम कलयुगी जीवों पर तरस करके, कृपा करके उन्होंने पाँच तत्वों का भौतिक शरीर धारण किया ताकि इन आँखों से 'दर्शन' करके, इन कानों द्वारा उनके मुखारविन्द से

'वचन-बाणी' सुनकर हमारे अन्दर श्रद्धा उत्पन्न हो तथा हम उन के आत्मिक मार्गदर्शन के प्रकाश में अपना जीवन ढाल कर, ब्रह्म मडंल में पहुँचने के लिए सत्संग द्वारा उद्यम कर सकें।

जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ।।
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ।।
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पुरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ।। (पृ. 96)

अब गुरू साहिब का पंच-भौतिक शरीर तो नहीं, परन्तु उन्होंने अपना आत्मिक—

प्रकाश

ज्ञान

दीक्षा

हुक्म

उपदेश

विचार

आदेश

वचन

खजाना

अथवा 'आपा' गुरबाणी के रूप में हमारे मार्गदर्शन के लिए बरक्शा है ।

गुरू साहिबान की 'बाणी-रूप', 'शबद-रूप', 'आत्मिक ज्योति' —सीमित तथा नश्वर शब्दों की पकड़ या मानवी बुद्धि की समझ तथा पकड़ से परे है । परन्तु इन **शब्दों या अक्षरों के पीछे वही ईश्वरीय ज्योति छुपी हुई है** ।

गुरबाणी में तथा भाई गुरदास जी की बाणी में गुरू का स्वरूप इस प्रकार ब्यान किया गया है —

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ।। (पृ. 635)
आपे सतिगरु सबदु है आपे ।। (पृ. 797)
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ।। (पृ. 943)
बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ।। (पृ. 982)

सचा सतिगुरु सबदु अपारा ।। (पृ. 1055)

सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ।। (पृ. 1309)

गुर मूरति गुर सबदु है
साध संगति मिलि अंम्रित वेला ।

(वा. भा. गु. 24@11)

सतिगुर महि शबद शबद महि सतिगुर है
निगुन सगुन गिआन निआन समझावै जी ।

(क. भा गु. 608)

'बाणी' एक है तथा 'शबद' भी एक है, इसलिए **'बाणी-रूप-गुरू'** तथा **'शबद-रूप-गुरू' एक ही हैं** तथा युगों-युगों से उसी एक, सदा कायम-दायम, सदा सलामत तथा अटल गुरू का ही अवतरण तथा प्रचलन चला आ रहा है ।

गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ।। (पृ. 53)

सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ ।।
ओहु अबिनासी पुररखु है सभ महि रहिआ समाइ ।। (पृ. 759)

आदि अंति एकै अवतारा ।।
सोई गुरू समझियहु हमारा ।। (चौपई पा. 10)

इस विचार से सिद्ध होता है कि गुरमति अनुसार आदि-अंत, युगो-युग 'एक गुरू' है — दो, चार, दस नहीं हो सकते ।

हाँ समय-समय पर, तब की सभ्यता तथा मानव रुचि अनुसार वही 'एक ज्योति' ही, भिन्न-भिन्न वेषों मे, शरीर धारण कर के जनता का उद्धार करने आयी तथा वे भिन्न-भिन्न बोलियों में अपनी 'बाणी' छोड गये, जिस से भिन्न-भिन्न मजहब अथवा धर्म चलते रहे ।

जरूरी तथ्य यह है कि वे सारे पीर-पैगम्बर, औलिये, अवतार आदि, अपने सेवकों व श्रद्धालुओं को अपने 'व्यक्तित्व' अथवा 'व्यक्ति पूजा' में ही फँसा गये ।

परन्तु गुरु साहिब ने सिक्खों पर असीम कृपा-बख्शिश की तथा दूर दृष्टि द्वारा

हमें 'व्यक्तिगत शख्सीयत (personality cult) से ऊपर उठा कर, सदा के लिए ईश्वरीय प्रकाश रूप —

'बाणी'

'शब्द'

'नाम'

'हुकुम'

के अटल तथा एक मात्र सच्चे गुरू से जोड़ गये।

गुरू साहिब ने इस दूर दृष्टि तथा अत्यन्त कृपा द्वारा हमें देह धारी गुरूओं की तालाश के प्रयत्न तथा इन स्वयं बने गुरूओं के भ्रम-चक्र व मनमति से सदा के लिए बचा लिया—तथा

बरक्शे हुए,
महापुरुषों,
संतों
भक्तों
साधु जनों
सिमरन वालों
शबद-सुरति वालों
अनहद शबद में विलीन हुए
गुरू प्यार में रंगे हुए
'नानक घर के गोले' बने हुए
'बै खरीद' सेवक बने हुए
प्रेम-स्वैपना की मस्ती वाले
प्रेम रस में विभोर हुए
प्रिम-प्याले से नशयी हुए
चुप-प्रीत में मतवारे हुए

गुरमुख प्यारों की संगति करने का ताकीदी उपदेश दिया है, जिसे गुरबाणी में—

'सति संगत'

'साध संगत'

'दैवीय संगत'

'आत्म संगत'

सच संगत

गुर संगत

'संत मंडली'

'साध सभा'

'उत्तम पंथ'

'संत सज्जन परवार'

आदि शब्दों द्वारा सम्मानित किया गया है।

साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ।। (पृ. 437)

मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ।। (पृ. 682)

संत सभा जैकरु करि गुरमुखि करम कमाउ ।। (पृ 1411)

गुरू साहिब की इस 'अमूल्य देन' अथवा 'गुर प्रसादि' को हमने न बूझा, न माना, शुक्राना तो क्या करना था !!

'इको सबदु वीचारि' —

ऊपर बताया जा चुका है कि 'बाणी' अथवा 'शबद' के दो स्वरूप हैं, एक सूक्ष्म तथा दूसरा स्थूल; एक आत्मिक अनुभवी रवेल तथा दूसरा बुद्धि की समझ तथा पकड़ का दायरा, एक सर्वज्ञ तथा दूसरा देश काल में सीमित, एक अटल तथा दूसरा नाशवन्त।

इसी प्रकार 'इको सबदु वीचारि' के दो पक्ष हैं—

एक बुद्धि का विषय, तथा

दूसरा अनुभवी आत्मिक ज्ञान का।

हम बड़ी भूल करते हैं, जब अत्यन्त सूक्ष्म आत्मिक विषयों को सीमित बुद्धि से समझ कर, ज्ञान तथा फिलोस्फियों द्वारा वाद-विवाद करते हैं। इस प्रकार अपने आप

को तथा संगति को भ्रम-चक्र तथा असमंजस में डालकर गुरबाणी के आशय से परे जा रहे हैं।

शीर्षक में आये शब्द **'इको सबदु वीचारि'** का भाव है— 'अनुभवी विचार', क्योंकि यह सूक्ष्म 'इका बाणी' अथवा 'शबद' केवल अनुभवी विचार से ही बूझा, सीझा, चीन्हा, पहचाना, जाना तथा आनन्द उठाया जा सकता है, यह सीमित बुद्धि के विचार का विषय नहीं है।

बूझना तथा सीझना किसी गुप्त भेद को जानने अथवा समझने को कहते हैं तथा चीन्हना व पहचानना किसी खोयी हुई या भूली हुई बात को याद करके पहचान करना है, इस सम्पूर्ण क्रिया को **'अनुभवी विचार'** कहा गया है।

साध संगत अथवा बख्शे हुए गुरमुख प्यारों के मेल तथा संगति में ध्यान पूर्वक बाणी का पाठ करते तथा नाम-अभ्यास कमाई करते हुए, हमारे मन की मैल धीरे-धीरे कटनी शुरू हो जाती है । हमारा मन हल्का होकर मायिकी मंडल में से गुब्बारे की भाँति ऊपर आत्मिक मंडल मे उड़ान भरता हुआ प्रकाश मंडल में हिलारे लेता हुआ किसी अकथनीय ईश्वरीय रहस्यमयी प्रकाश की झलकें अनुभव करता है।

इस प्रकार मायिकी मंडल में से निकल कर, जब हमाने मन पर आत्मिक प्रकाश की झलकें पड़ती हैं तब हमारा **अनुभव खुलता है** ।

इसी अनुभवी प्रकाश द्वारा ही हमारा मन आत्म प्रकाश से एक सुर होकर 'बाणी' अथवा 'अनहद शबद' के प्रकाश मयी तत् ज्ञान को समझ-जान-बूझ-सीझ सकता है तथा **गुरबाणी का अन्तर-आत्मिक तत् ज्ञान का लाभ उठा सकता है ।**

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ।। (पृ. 39)

सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ।।
निरमल बाणी सबदि वखाणहि ।। (पृ. 115)

सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ।। (पृ. 912)

अंम्रित बाणी ततु बरवाणी गिआन धिआन विचि आई ।।

गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरंती करमि धिआई ।। (पृ. 1243)

दूसरे शब्दों में इस 'अनहद बाणी' अथवा 'अनहद शबद' को समझने, बूझने तथा इसके तत् ज्ञान के प्रकाश अथवा **'अनुभवी विचार'** का आनन्द लेने के लिए—

लगातार साध संगति

शबद कमाई

गुर प्रसादि

अनिवार्य है ।

गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ।। (पृ. 1346)

इस प्रकार गरु वाक् **'इह बाणी जो जीअहु जाणै,** तिसु अंतरि रवै हरि नामा' की आत्म-कला हमारे मन पर घट सकती है ।

आत्मिक मंडल का 'अनुभवी ज्ञान' दिमागी खोज की पकड़ अथवा पहुँच से बाहर है ।

जब शरीर को बिजली के करंट की 'छुह' लगती है, तब समस्त शरीर में कोई— थरथराहट (vibration) धूम जाती है, परन्तु यह थरथराहट हारिकारक (destructive) है ।

इसके उल्ट जब अनुभवी आत्मिक 'दमक' अथवा 'शबद' या 'नाम' के प्रकाश का झल्कारा हमारे मन पर पड़ता है, तब तन, मन पर अन्तर-आत्मा में कोई अनोखी तथा अकथनीय रुनझुन अनुभव होती है, जो —

सुख

शान्ति

शीतलता

आनन्द

प्रीत

प्यार

प्रिम रस

चाव

महारस

प्रदान करती है ।

परन्तु इस रुनझुन के स्वाद तथा रस को शब्दों या बोली में ब्यान नहीं किया जा सकता ।

जहा बोल तह अछर आवा ।। जह अबोल तह मनु न रहावा ।।
बोल अबोल मधि है सोई ।।
जस ओहु है तस लखै न कोई ।। (पृ. 340)
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ।। (पृ. 1370)

इस अलौकिक आत्मिक 'रुनझुन' को महसूस करना अथवा आनन्द उठाना ही आत्मिक देन 'नाम' या 'शबद' को बूझना, सीझना तथा पहचानना अथवा **'अनुभवी विचार'** कहा गया है ।

कितने आश्चर्य तथा खेद की बात है कि कई जन्मों से परमार्थ के विषय में —

पढ़ते-पढ़ाते

सुनते-सुनाते

कथा-वार्ता करते

उपदेश करते

वाद-विवाद करते

कर्म-काण्ड करते

हुए भी गुरबाणी में दर्शाये 'आत्मिक ज्ञान' अथवा अनुभवी विचार की सचाई को हम बूझ, सीझ, चीन्ह तथा पहचान नहीं सके व जीवन के निजी **अनुभव में आनन्द भी नहीं उठा सके !!**

हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ।। (पृ. 560)

हम अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा मायिकी अथवा पदार्थिक प्रकृति के बाहरमुखी अविष्कारों में इतने खचित अथवा मस्त हुए हैं कि अन्तर-मुख आत्मिक खोज की हमें आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती तथा न ही फुर्सत है ।

आत्मिक मंडल की 'झल्कों' या छुह के प्रभाव व रस अथवा अनुभवी विचार को शब्दों या बोली में ब्यान नहीं किया जा सकता । परन्तु गुरबाणी में इस अनोखे आत्मिक अनुभव का वर्णन यूँ किया गया है —

अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ।।
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ।। (पृ. 436)

तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ।।
मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ।।
मिलि संत गावहि रवसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिंनीआ ।। (पृ. 545)

मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ।।
तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ।। (पृ. 557)

रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ।।
किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ।। (पृ. 925)

माई री पेखि रही बिसमाद ।।
अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ।। (पृ. 1226)

हाँ जी, हमारे मन तन पर जो आत्मिक छुह का सुन्दर, मीठा तथा विस्मादमय प्रभाव होता है, उसे —

रुन झुन
थर कम्पन
अनहद झुनकार
अनहद धुन
अनहद बाणी
अनहद नाद
अनहद शबद

कहा गया है तथा इस के **अन्तर-आत्मिक अनुभवी निजी तजुरबे को —**

बूझना

सीझना

चीन्हना

जानना

पहचानना

अथवा 'अनुभवी विचार' कहा गया है।

परन्तु यह **अन्तर-आत्मिक खेल**—

निराला है

विलक्षण है

आश्चर्यजनक है

अन्तर-मुख है

चुप-प्रीत है

प्रेम-स्वैपना है

विस्मादमय है

नाम-खुमारी है

आत्म महा-रस है

आत्म रंग है

तथा यह **'आश्चर्यजनक खेल'** बाहर से समझे या जाने हुए ख्यालों तथा धारणाओं के दिमागी ज्ञान से **विलक्षण** है।

'आत्मिक अनुभव' अथवा **'अनुभवी विचार'** के बिना सारा संसार ही मायिकी अज्ञानता अथवा भ्रम गढ़ में ही विचरण करता तथा गलतान रहता है।

जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखिआ ।।
गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ।। (पृ. 400)

इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ।। (पृ. 558)

मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ।।
अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ।। (पृ. 712)

अब प्रशन यह है कि **अनुभवी विचार कैसे प्राप्त की जाये** ?

पहले हमें यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिए कि सूक्ष्म 'अनुभवी विचार' आत्मिक मंडल का खेल है । इसलिए यदि हमें अनुभवी विचार प्राप्त करना है, तब हमें अपनी सीमित बुद्धि से उपर उठ कर, ध्यान अथवा सुरति द्वारा, अपने अन्दर, अन्तरमुख होकर सिमरन करना पड़ेगा। सुरति द्वारा अन्तरमुख सिमरन ही 'अनुभवी विचार' है। इसके फलस्वरूप हमें 'इका बाणी' 'इको शब्द' के विचार का अनुभव या अनुभव प्रकाश हो सकता है ।

जब तक हम सुरति द्वारा सिमरन करते हुए अन्तर-मुख नहीं होते, हमें कभी भी आत्मिक खेल का 'तत् ज्ञान' प्राप्त नहीं हो सकता । शेष बाहरी बुद्धि मंडल के ज्ञान तथा विचार सब अधूरे व फोकट हैं।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही ।।
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ।। (पृ.-102)